Shri Baglamukhi Puja Vidhi

भगवती बगलामुखि पूजनोपचार पद्धति

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

मंत्र जप, देवोपासना अथवा पुरश्चरण से पूर्व नित्य देवता का पूजन सामग्रियों द्वारा आदर सत्कार किया जाता है जिससे देवता प्रसन्न होकर साधक की पूजा को स्वीकार कर अभीष्ट फल प्रदान करते हैं। अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार साधक को जप से पूर्व उत्तम सामग्रियों से अपने इष्टदेव का पूजन अवश्य करना चाहिये।

भगवती बगलामुखि पूजन पद्धति– साधक स्नानादि कर पूजनस्थल पर आवश्यक सामग्रियों को एकत्रित कर हाथ में पीतपुष्प लेकर भगवती का ध्यान करें–

ध्यानम्– सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांग रुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गर पाशवज्र रसनाः संबिभ्रतिं भूषणै र्व्याप्तांगी।। बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये।। ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ श्रीबगलादेव्यै नमः।।

आवाहन– आगच्छ त्वं महादेवि! स्थाने चात्र स्थिरा भव। यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संन्निधौ भव।। श्रीबगलादेव्यै नमः। बगलादेवीमावाहयामि। आवाहनार्थे पुष्पांजलिं समर्पयामि।

पुष्पांजलि समर्पण करें। यदि प्राण प्रतिष्ठित प्रतिमा हो तो आवाहन के स्थान पर पुष्पांजलि दे अन्यथा भगवती का आवाहन करें।

आसन- अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। रत्नमय आसन या फूल समर्पित करें।

पाद्य- गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्। पाद्यार्थं ते प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि।। श्रीबगलादेव्यै नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। शुद्ध जल चढ़ाये।

अर्घ्य- गंधपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा।। श्रीबगलादेव्यै नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। पीत चन्दन, पुष्पाक्षत से निर्मित अर्घ्य दें।

आचमन- कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरि।। श्रीबगलादेव्यै नमः। आचमनं समर्पयामि। कर्पूर से सुवासित शीतल जल चढ़ाये।

स्नान- मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देवि! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। स्नानार्थं जलं समर्पयामि। गंगाजल से स्नान करायें।

स्नानांगाचमन- स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि। आचमन के लिये जल दें।

दुग्धस्नान- कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। दुग्धस्नानं समर्पयामि। गोदुग्ध से स्नान करायें।

दधिस्नान- पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देवि! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। दधिस्नानं समर्पयामि। गोदधि से स्नान करायें।

घृतस्नान- नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। गोघृत से स्नान करायें।

मधुस्नान- पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजःपुष्टिसमायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। मधु से स्नान करायें।

शकर्रास्नान- इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्। मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि। शक्कर से स्नान करायें।

पंचामृत स्नान- पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्। पंचामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। पंचामृतस्नानं समर्पयामि। पंचामृत से स्नान करायें।

गंधोदकस्नान- मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरूमिश्रितम्। सलिलं देवदेवेशि शुद्धस्नानाय गृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। गंधोदकस्नानं समर्पयामि। मलयचन्दन और अगरू से मिश्रित जल चढ़ाये।

शुद्धोदकस्नान- शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्ध जल से स्नान करायें।

आचमन- शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। आचमन के लिये जल दें।

वस्त्र- पटट्युग्मं मया दत्तं कंचुकेन समन्वितम्। परिधेहि कृपां कृत्वा मातर्दुर्गतिनाशिनी।। श्रीबगलादेव्यै नमः। वस्त्रोपवस्त्रं

कंचुकीयं च समर्पयामि। धौतवस्त्र, उपवस्त्र एवं कंचुकी निवेदित करें। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। आचमन के लिये जल दें।

सौभाग्यसूत्र- सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम्। कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा।। श्रीबगलादेव्यै नमः। सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि। सौभाग्यसूत्र चढ़ायें।

चन्दन- श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठे चन्दनं प्रतिगृह्यताम्। श्रीबगलादेव्यै नमः। चन्दनं समर्पयामि। मलयचन्दन लगायें।

हरिद्राचूर्ण- हरिद्रारंजिते देवि! सुखसौभाग्यदायिनी। तस्मात् त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छ मे। श्रीबगलादेव्यै नमः। हरिद्रां समर्पयामि। हल्दी का चूर्ण चढ़ायें।

कुंकुम- कुंकमं कामदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्। कुंकुमेनार्चिता देवि कुंकुमं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। कुंकुमं समर्पयामि। कुंकुम चढ़ायें।

सिन्दूर- सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्। अर्पितं ते मया भक्त्या प्रसीद परमेश्वरि।। श्रीबगलादेव्यै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि। सिन्दूर चढ़ाये।

काजल- चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शांतिकारकम्। कर्पूरज्योतिसमुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।। श्रीबगलादेव्यै नमः। कज्जलं समर्पयामि। काजल चढ़ायें।

दूर्वांकुर- तृणकान्तमणिप्रख्यहरिताभिः सुजातिभिः। दूर्वाभिराभिर्भवतीं पूज्यामि महेश्वरि।। श्रीबगलादेव्यै नमः। दूर्वांकुरान् समर्पयामि। दूर्वा चढ़ायें।

बिल्वपत्र- त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणाम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। बिल्वपत्रं समर्पयामि। बिल्वपत्र चढ़ायें।

आभूषण- हारकंकणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः। रत्नाढ्यं हीरकोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। आभूषणानि समर्पयामि। आभूषण चढ़ायें।

पुष्पमाला- माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्प एवं पुष्पमाला चढ़ायें।

नानापरिमलद्रव्य- अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नानापरिमलद्रव्यं गृहाण परमेश्वरि।। श्रीबगलादेव्यै नमः।

नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। अबीर, गुलाल, हल्दी का चूर्ण चढ़ायें।

सौभाग्यपेटिका- हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरादिसमन्विताम्। सौभाग्यपेटिकामेतां गृहाण परमेश्वरि।। श्रीबगलादेव्यै नमः। सौभाग्यपेटिकां समर्पयामि। सौभाग्यपेटिका समर्पित करें।

धूप- वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। श्रीबगलादेव्यै नमः। धूपमाघ्रापयामि। धूप दिखायें।

दीप- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। दीपं दर्शयामि। घृत या पीली सरसों का दीपक दिखाकर हाथ धो लें।

नैवेद्य- शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारर्थं भक्ष्यभोज्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्य निवेदित करें।

आचमनीयादि- नैवाद्यन्ते ध्यानमाचमनीयं जलमुत्तरापोऽशनं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि।। आचमनी से जल दें।

ऋतुफल- इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।। श्रीबगलादेव्यै नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि। ऋतुफल समर्पित करें।

ताम्बूल- पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि। इलायची, लौंग, पूगीफल के साथ पान निवेदित करें।

दक्षिणा- दक्षिणां हेमसहिंता यथाशक्तिसमर्पिताम्। अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वरि।। श्रीबगलादेव्यै नमः। दक्षिणां समर्पयामि। दक्षिणा चढ़ाये।

आरती- कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरर्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदा भव।। श्रीबगलादेव्यै नमः। कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि। कर्पूर से आरती करें।

प्रदक्षिणा- यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।। श्रीबगलादेव्यै नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि। प्रदक्षिणा करें।

मंत्रपुष्पांजलि- श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः। मंत्रपुष्पांजलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्।। श्रीबगलादेव्यै नमः। मंत्रपुष्पांजलि समर्पयामि। पुष्पांजलि समर्पित करें।

नमस्कार- या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।। श्रीबगलादेव्यै नमः। नमस्कारान् समर्पयामि। नमस्कार करें, इसके बाद चरणोदक सिर पर चढ़ायें।

क्षमायाचना- मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।। श्रीबगलादेव्यै नमः। क्षमायाचनां समर्पयामि। क्षमायाचना करें।

पूजन में जिस सामग्री का अभाव हो, उसकी पूर्ति मानसिक भावना से कर सकते हैं। जैसे- पुष्प के अभाव में 'मनसा परिकल्पयामि पुष्पाणि समर्पयामि' कह देते हैं। दूसरे विकल्प में अक्षत, पुष्प या जल चढ़ा सकते हैं।

स्थूल सामग्री के अभाव में मानसिक पंचोपचार पूजन- ॐ ह्लीं लं पृथ्वीतत्त्वात्मकं गंधं परिकल्पयामि नमः।

ॐ ह्लीं हं आकाश तत्त्वात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि नमः।

ॐ ह्लीं यं वायु तत्त्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि नमः।

ॐ ह्लीं रं अग्नि तत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि नमः।

ॐ ह्लीं वं अमृत तत्त्वात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

ॐ ह्ल्रीं सौं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

पूजन प्रकार-

पंचोपचार- गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

दशोपचार- पाद, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, आचमनीय, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

षोडशोपचार- पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल, स्तवपाठ, तर्पण, नमस्कार।

अष्टादश उपचार- आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, आभूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, अन्न, दर्पण, माला, अनुलेपन, नमस्कार।

चतुष्षष्ट उपचार- ध्यान, आवाहन, पाद्य, अर्घ्य, आसन, तैल, स्नान, उबटन, अभिषेक, धौतवस्त्र, रेशमी वस्त्र, उपवस्त्र, स्वर्णासन, विलेपन, धूप, पुष्प, पुष्पमाला, मुकुट, अर्धचन्द्र, सिन्दूर, बिंदी, काजल, कुण्डल, नासाभरण, आलक्तक, मंगलसूत्र, हार, पदक, महापदक, मुक्तावली, एकावली, छन्नवीर, केयूर,

चूड़ियां, अंगूठी, कटिसूत्र, नूपुर, बिछुए, पाश, अंकुश, धनुष, बाण, अमृतासव, आचमन, ताम्बूल, स्तव, नीराजन, छत्र, चामर, दर्पण, तालवृन्द, गंध, पुष्प, धूप, दीप, दाल, शाक, घी, दूध, दिव्यान्न, मधु, माष, पूरी, मालपुआ।

वर्तमान समय में मुख्य रूप से पंचोपचार पूजन का ही प्रचलन है। विस्तृत पूजन राजोपचार की श्रेणी में आता है। राजसी पूजा का आयोजन अनुष्ठान आरम्भ करने से पूर्व, महापर्व अथवा किसी विशेष कर्म में कर सकते हैं। विस्तृत राजसी पूजा का आयोजन कर्मकाण्डी विद्वान के संरक्षण में ही करना चाहिये।

शास्त्रों के अनुसार पूजा के पांच प्रकार बताये गये हैं-

अभिगमन- देवता के स्थान को साफ करना, लीपना, निर्माल्य हटाना- ये कर्म अभिगमन पूजा कहे जाते हैं।

उपादान- गंध, पुष्प आदि पूजन सामग्री का संग्रह करना उपादान है।

योग- इष्टदेव की आत्मरूप से भावना करना योग है।

स्वाध्याय- मंत्र के अर्थ का अनुसंधान करते हुए जप करना, सूक्त, स्तोत्र, गुण, नाम, लीला आदि का पठन व कीर्तन करना- ये सब स्वाध्याय हैं।

इज्या- उपचारों के द्वारा अपने आराध्य देव की पूजा को इज्या कहते हैं। ये पांच प्रकार की पूजाएं क्रमशः सार्ष्टि, सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य और सारूप्य-मुक्ति को प्रदान करने वाली हैं।

देवपूजन के दो भेद कहे गये हैं- अन्तर्याग और बहिर्याग। अन्तर्याग में सारी पूजन क्रियायें मानसिक एवं कल्पना प्रसूत होती हैं और बहिर्याग में बाह्य स्थूल पूजन सामग्रियों के द्वारा देवपूजन किया जाता है। अन्तर्याग (मानसी पूजा) उत्तम मानी गयी है क्योंकि उसमें बाह्य सामग्रियां नहीं होती हैं। इसमें शुद्धि-अशुद्धि का भी कोई भय नहीं होता है। उसमें षट्चक्रों को पंचतत्वों का प्रतिनिधि बनाकर पूजा की जाती है। यह पूजा उच्चस्तरीय साधकों के लिये हैं जिनको ज्ञान एवं ध्यान की विशेष जानकारी है। इसमें धूप, दीप, गन्ध, पुष्प आदि मुद्राओं द्वारा अर्पित होती है। मानस पूजा में साधक वह बहुमूल्य पदार्थ भी देवता को अर्पित कर सकता है जिसे वह धनाभाव के कारण अर्पित नहीं कर सकता है। मानस पूजन मे साधक उत्तम से उत्तम दिव्य सामग्रियां अपने इष्टदेव को अर्पित कर सकता है, क्योंकि मानस पूजन में सामग्रियों का समर्पण हमारी मानसिक भावनाओं द्वारा होता है। यह पूजन धनवान और निर्धन कोई भी किसी भी स्थान व किसी भी समय सम्पन्न कर सकता है।

जैसे– मैं अपनी माता भगवती को स्वादिष्ट मिष्ठान, ताम्बूल, फल, खीर या अन्य श्रेष्ठ सामग्रियां खिला रहा हूं और मेरी माता प्रसन्नतापूर्वक इन्हें ग्रहण कर रही हैं। हीरे जड़ित स्वर्णसिंहासन, मुकुट एवं अन्य आभूषण मैं माता रानी को अर्पित कर रहा हूं। इस प्रकार की मानस पूजा प्रेम एवं भक्तिभाव से ही सम्पन्न होती है। इसलिये नारदजी ने मानस पूजा को सर्वश्रेष्ठ कहा है। 'स्वच्छंदतंत्र' में भी लिखा है– जो व्यक्ति मानस याग न कर अन्य अर्थात् बाह्य याग को करता है वह याग अशिव होता है। उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में स्थित भुड़कुड़ा ग्राम के प्रथम महंत भगवान् विष्णु (शालिग्राम) की मानस पूजा के द्वारा उच्चकोटि के सिद्ध महात्मा हो गये थे। महाभारत में महर्षि गर्गाचार्य स्वयं बताते हैं कि मैंने सरस्वतीतट पर मानस यज्ञ द्वारा भगवान् शिव को संतुष्ट किया, इससे प्रसन्न होकर उन्होंने चौसठ कलाओं का अद्भुत ज्ञान मुझे प्रदान किया और मेरी दस लाख वर्ष की आयु नियत कर दी। महर्षि गर्गाचार्य जी वैदिक मंत्रद्रष्टा ऋषि हैं। ऋग्वेद के कई मंत्रों के आप द्रष्टा हैं। दुर्गासप्तशती में मानस पूजन का विस्तृत विधान मिलता है साधनजन चाहे तो उसका आश्रय ले सकते हैं।

वास्तव में किसी भी मनुष्य की इतनी सामर्थ्य नहीं जो भगवती को कोई पदार्थ या सामग्री अर्पित कर उन्हें प्रसन्न कर सके। अपितु वो ही माता की भांति हमारा लालन–पालन करती हैं। किसी भी साधारण सामग्री में भी केवल भक्ति एवं प्रेम की सुगन्ध होने पर देवता उसे तत्काल स्वीकार कर अभीष्ट फल प्रदान करते हैं। जैसे– श्रीराम ने परम भक्तानि शबरी के झूठे बेर सहर्ष ही स्वीकार कर उन्हें मुक्ति प्रदान की थी।

बहिर्याग पूजा में बाह्य उत्तम सामग्रियों से देवता की पूजा की जाती है। जब तक साधक ध्यान और ज्ञान में दक्ष न हो तब तक वह स्थूल पूजा के द्वारा देवता को संतुष्ट करे। पूजा के समय पुष्प देवता के मस्तक पर चढ़ाना चाहिये। पूजन के समय देवता का मस्तक पुष्पों से ढका रहना चाहिये। आदि और अन्त दोनों में ही सदा देवता का ध्यान करना चाहिये।

पूजनफल– 'शैवरत्नाकर' में देवपूजन का फल इस प्रकार कहा गया है–

- जो आवाहन देता है वह यज्ञ का फल प्राप्त करता है।
- उत्तम आसन प्रदान करने से मनुष्य इन्द्र पद प्राप्त करता है।
- पाद्य देने से वह पापों को नष्ट करता है।

- अर्घ्य देने से मनुष्य अमूल्य बन जाता है।
- आचमनीय देने से वह स्वस्थचित्त होकर सुख प्राप्त करता है।
- स्नान कराने से रोगों के भय से मुक्त होता है।
- वस्त्र देने से आयु वृद्धि होती है।
- यज्ञोपवीत प्रदान करने से वह वेदवेत्ता हो जाता है।
- जो मनुष्य भूषण अर्पित करता है वह आपत्तियों से मुक्त होता है। गन्ध से मनुष्य काम की सिद्धि पाता है।
- अक्षतों से मनुष्य अक्षत हो जाता है।
- नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प अर्पित करने से मनुष्य स्वर्ग में जाता है।
- धूप पापों को नाश करती है।
- दीप मृत्यु का विनाश करता है।
- नैवेद्य देकर मनुष्य सबका मान्य होकर तृप्त रहता है।
- पान इलायची अर्पण करने से मनुष्य कीर्तिमान होता है।
- नीराजन से शुद्धात्मा वाला हो जाता है।
- दर्पण दिखाने से मनुष्य प्रकाशित होता है।
- फल अर्पित करने से मनुष्य पुत्रवान होता है।
- पान देने से वह स्वर्ग प्राप्त करता है।

- जो प्रदक्षिणा करता है वह पग-पग पर पापों का नाश करता है।
- जो देवता को दण्डवत प्रणाम करता है वह देहान्त पश्चात् स्वर्ग में देवता के निकट बालू के कणों की संख्या के बराबर वर्षों तक निवास करता है।
- स्तोत्र पाठ से दिव्य देह होकर वह तत्काल वाग्मी हो जाता है।
- पुराण का पाठ करने से समस्त पापों का शमन होता है।

शिवपुराण में पूजन फल का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है- देवता का अभिषेक करने से आत्मशुद्धि होती है। गंध अर्पित करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। नैवेद्य लगाने से आयु बढ़ती है और तृप्ति होती है। धूप निवेदन करने से धन की प्राप्ति होती है। दीप दिखाने से ज्ञान का उदय होता है और ताम्बूल अर्पण करने से भोग की उपलब्धि होती है। इसलिये स्नान आदि छः उपचारों को यत्नपूर्वक करना चाहिये। नमस्कार और जप-ये दोनों सम्पूर्ण अभीष्ट फल को देने वाले हैं। इसलिये पूजा के अंत में जप और नमस्कार सदा ही करना चाहिये।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana